B.A. Ist year Hindi

Unit-1 भारतीय ज्ञान-परम्परा और हिन्दी साहित्य

Ch.1

परम्परा से आशय → किसी विषय को लेकर पहले से चली आ रही ऐसी अवधारणा, विचारधारा अथवा बात को परम्परा कहा जाता है, जिसमें पुरातन के साथ आधुनिक का श्रृंखलाबद्ध रूप से समावेश होता चला जाता है। इन्हीं परम्पराओं से सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा ⇒ भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में यदि बात की जाए तो इसमें प्राचीन काल को गुरु से शिष्य को स्थानान्तरित की जाने वाली ज्ञान-परम्परा पद्धति को परम्परा कहा जाता है। जिसे 'गुरु-शिष्य परम्परा' का नाम दिया गया।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन

(1) डॉ॰ ग्रियर्सन द्वारा प्रस्तुत काल-विभाजन — सर्वप्रथम डॉ॰ ग्रियर्सन ने 'द मॉडर्न वर्नेक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' में काल विभाजन करने का प्रयास किया।

(1) चारणकाल (700 ई०-1300 ई०), (2) पन्द्रहवीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जागरण
(3) जायसी की प्रेम कविता (4) ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय
(5) मुगल दरबार (6) तुलसीदास
(7) रीतिकाव्य (8) तुलसी के अन्य परवर्ती कवि
(9) अठारहवीं शताब्दी (10) कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान
(11) महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान।

(2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा प्रस्तुत काल-विभाजन → इनके द्वारा किया गया काल विभाजन अधिक वैज्ञानिक, स्पष्ट, व्यवस्थित और प्रामाणिक रहा — आदर्श (सर्वमान्य) काल-विभाजन

1. आदिकाल (वीरगाथाकाल - संवत 1050 - संवत 1375)
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल - 1375 - 1700
3. उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल / श्रृंगार काल - 1700 - 1900
4. आधुनिक काल (गद्यकाल) - 1900 से अब तक

(1) आदिकालीन हिन्दी-साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ :-

(1) आश्रयदाताओं की प्रशंसा (2) युद्धों का सजीव वर्णन
(3) वीर और श्रृंगार रस का मिश्रण (4) रासो ग्रन्थ-परम्परा
(5) ऐतिहासिकता का अभाव एवं कल्पना का प्राचुर्य
(6) प्रबन्ध और मुक्तक काव्यों की रचना (7) विशद प्रकृति-चित्रण
(8) रचनाओं में सन्दिग्धता (9) डिंगल एवं पिंगल भाषा का प्रयोग
(10) विविध छन्दों एवं अलंकारों का प्रयोग

(2) भक्तिकालीन साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ →

(1) राजाश्रय का त्याग (2) आध्यात्मिक एवं दार्शनिकता
(3) नाम की महत्ता (4) अहंकार का त्याग (5) गुरु की महत्ता
(6) सुधारवादी दृष्टिकोण (7) श्रृंगार तथा शान्त रस की प्रधानता
(8) मुक्तक एवं प्रबन्धकाव्यों की रचना (9) भाषा
(10) विविध छन्दों एवं अलंकारों का प्रयोग

(3) रीतिकाल (श्रृंगारकाल) की विशेषताएँ → (1) श्रृंगारिकता (2) रीति-निरूपण
(3) अलंकारिकता (4) भक्ति और नीति (5) वीर रस की कविता
(6) प्रकृति-चित्रण (7) अतिशयोक्ति वर्णन (8) जनता की भावनाओं का अभाव
(9) मुक्तककाव्य की प्रधानता (10) ब्रजभाषा का प्रयोग
(11) छन्द योजना (12) हिन्दी-गद्य साहित्य का निर्माण

(4) आधुनिक काल की सामान्य प्रवृत्तियाँ →

(1) स्वदेश-प्रेम की भावना (2) जनजीवन का चित्रण (3) यथार्थता
(4) रूढ़ियों के प्रति विद्रोह (5) बौद्धिकता की प्रधानता (6) नवीनता एवं विविधता (7) स्वच्छन्दता (8) अहं-भावना (9) विविध वादों का जन्म
(11) अलंकार एवं छन्द-विधान

Ch. 2 आदिकालीन साहित्य

आदिकाल का साहित्य
- (1) धार्मिक अथवा अपभ्रंश साहित्य
  - बौद्ध साहित्य
    - (क) सिद्ध साहित्य
    - (ख) नाथ साहित्य
  - (ख) जैन साहित्य
  - स्फुट साहित्य
- (2) लौकिक अथवा देशभाषा साहित्य
  - डिंगल के रासो ग्रन्थ
  - श्रृंगार परक प्रधान काव्य
  - स्फुट साहित्य

TECHNOLOGY
MANAGEMENT &
BULANDSHAHR

Ch.3. भक्ति आन्दोलन और उसका साहित्य

भक्तिकाल के प्रमुख सम्प्रदाय → (क) शैव सम्प्रदाय – जो शिव को आराध्य मानते हैं –
(ख) शाक्त सम्प्रदाय – जो शक्ति (दुर्गा) को आराध्य माने
(ग) वैष्णव सम्प्रदाय – जो विष्णु और उनके अवतारों को आराध्य मानते हैं।

सम्प्रदायों का वर्गीकरण – (अ) निर्गुण भक्ति धारा – ① सन्त सम्प्रदाय (ज्ञानाश्रयी) ② सूफी सम्प्रदाय (प्रेमाश्रयी)
(ब) सगुण भक्ति धारा – ① श्री सम्प्रदाय (विष्णु / राम भक्ति) – ② ब्रह्म सम्प्रदाय
(3) कृष्णभक्ति के विविध सम्प्रदाय – (क) वल्लभ सम्प्रदाय
(ख) निम्बार्क सम्प्रदाय (ग) राधा वल्लभ सम्प्रदाय (घ) हरिदासी सम्प्रदाय
(ङ) चैतन्य (गौड़ीय) सम्प्रदाय।

सन्त काव्य धारा अथवा ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि – ① कबीर ② धर्मदास
③ गुरु नानकदेव ④ दादू ⑤ सुन्दरदास (6) मलूकदास (7) रैदास

प्रेमाश्रयी काव्यधारा अथवा सूफी सम्प्रदाय के कवि ① कुतुबन ② मंझन
③ जायसी ④ उसमान ⑤ नूरमुहम्मद (6) प्रेमी (7) कासिमशाह (8) मुल्लादाऊद

भक्तिकाल की सगुण काव्य धारा के प्रमुख कवि →

(क) रामभक्ति काव्यधारा के कवि → ① स्वामी रामानन्द ② अग्रदास
③ तुलसीदास ④ नाभादास ⑤ केशवदास (6) सेनापति (7) विद्यापति

(ख) कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवि → ① कृष्णदास ② परमानंददास
③ कुम्भनदास ④ नन्ददास ⑤ चतुर्भुजदास (6) छीतस्वामी (7) गोविंदस्वामी
(8) सूरदास (सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्णकाव्य कवि) ① मीराबाई ② रसखान

Chapter – 4 रीतिकाल और उसके साहित्य के भेद

रीतिकालीन-काव्य के भेद → ① रीतिबद्ध कवि ② रीति मुक्त कवि
③ रीतिसिद्ध कवि

रीतिकाल की विशेषताएँ → ① शृंगारिकता ② रीति-निरूपण ③ आलंकारिकता
④ भक्ति और नीति ⑤ वीररस की कविता (6) प्रकृति चित्रण
(7) अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन (8) जनता की भावनाओं की अपेक्षा
(9) मुक्तक काव्य की प्रधानता (10) ब्रजभाषा का प्रयोग (11) छन्द योजना
(12) हिन्दी गद्य साहित्य की रचना

BULANDSHAHR

Ch. 5.

Unit - II आधुनिककाल : नामकरण-1900 परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ

आधुनिक काल का काल खण्डों में विभाजन → डॉ० नगेन्द्र के द्वारा →

① पुनर्जागरण काल (भारतेन्दुकाल) सन् 1857-1900ई.,
② जागरण-सुधारकाल (द्विवेदीकाल) सन् 1900-1918 ई.,
③ छायावाद काल सन् 1918-1938 ई.,
④ छायावादोत्तरकाल-
(i) प्रगति-प्रयोगकाल सन् 1938-1953 ई.
(ii) नवलेखन काल सन् 1953-ई० से अब तक.

नव जागरण काल की मुख्य गद्य विधाएँ -
① कहानी ② उपन्यास ③ निबन्ध, नाटक, एकांकी, आलोचना, रिपोर्ताज ④ संस्मरण

Ch. 6 भारतेन्दु युग! प्रवृत्तियाँ एवं अवदान

अवधि 1857 - 1900

भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि → ① भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ② बद्रीनारायण चौधरी "प्रेमघन" ③ प्रतापनारायण मिश्र ④ श्री राधा चरण गोस्वामी ⑤ राधाकृष्णदास

भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ → भावपक्ष -
① राष्ट्रीयता ② भक्तिभावना ③ सामाजिक चेतना ④ श्रृंगारिकता ⑤ प्रकृति चित्रण ⑥ हास्य व्यंग्य ⑦ काव्यानुवाद

कलापक्ष भाषा - खड़ीबोली, ब्रजभाषा छन्द - पद, दोहा, चौपाई, सोरठा कवित्त, सवैया, कुण्डलिया.
अलंकार - उपमा, उत्प्रेक्षा रूपक अनुप्रास, यमक श्लेष आदि

भारतेन्दु युग की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं के नाम -
① उदन्त मार्तण्ड, ② कविवचन सुधा ③ हरिश्चन्द्र मैगजीन हिन्दी प्रदीप आनन्द कादम्बिनी तथा 'ब्राह्मण'.

Ch. 7 द्विवेदी और छायावादी युग- प्रवृत्तियाँ

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि → (1) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(2) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (3) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
(4) राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' (5) रामचरित उपाध्याय (6) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
(7) मैथिलीशरण गुप्त, (8) रामनरेश त्रिपाठी (9) बालमुकुन्द गुप्त
(10) गोपालशरण सिंह

द्विवेदी युग की विशेषताएँ → (1) राष्ट्रीयता (2) मानवतावादी दृष्टिकोण
(3) नीति और आदर्श (4) वर्ण्य-विषय की विविधता (5) प्रकृति चित्रण
(6) हास्य व्यंग्य भाषा – खड़ी बोली

छायावाद → 'छायावाद' शब्द के प्रयोक्ता मुकुटधर पाण्डेय हैं।

छायावाद की विशेषताएँ → (1) सौन्दर्य-भावना (2) करुणा (3) दुःखवाद
(4) मानवतावाद (5) प्रेम भावना (6) जीवन के बदलते मूल्यों की अभिव्यक्ति
(7) प्रतीकप्रधान शैली (8) नवीन छन्द-योजना (9) गीतात्मकता

छायावाद के जनक – जयशंकर प्रसाद

छायावाद के चार स्तम्भ → (1) जयशंकर प्रसाद (2) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(3) सुमित्रानन्दन पन्त (4) महादेवी वर्मा।

MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

Ch. 8 उत्तर छायावाद की विविध वैचारिक प्रवृत्तियाँ

उत्तर छायावाद के अन्य नाम – उत्तर छायावाद, छायावादोत्तर, साठोत्तर, स्वतन्त्रोत्तर काल

छायावाद की वैचारिक प्रवृत्तियाँ → प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता

प्रगतिवाद की विशेषताएँ (1) पुरातन के प्रति विद्रोह (2) शोषितों के प्रति सहानुभूति
(3) शोषक वर्ग की भर्त्सना (4) मानवतावादी दृष्टिकोण (5) यथार्थवादी दृष्टिकोण
(6) नारी विषयक नव दृष्टिकोण (7) मार्क्स तथा रूस का गुणगान (8) कलापक्ष में नवीनता

प्रयोगवाद की विशेषताएँ → (1) वैयक्तिकता एवं अहं की प्रधानता (2) अतिनग्न यथार्थवाद
(3) अति बौद्धिकता (4) निराशा की प्रधानता (5) उपमानों की प्रधानता (6) भाषा, छन्द विधान

नई कविता → विशेषताएं → (1) वाद मुक्त (2) व्यक्ति स्वातन्त्र्य की पोषक
(3) व्यक्ति की आस्था - अनास्था में भ्रम (4) अनुभूति परकता
(5) जीवन - सत्य की स्वीकारोक्ति (6) प्रकृति - प्रेम
(7) औद्योगिक सभ्यता की शुष्कता का चित्रण (8) भाषा एवं बिम्बों का वैविध्य

समकालीन कविता - विशेषताएं :- (1) राजनैतिक विचारों की विदाई
(2) यथार्थता बोध (3) निषेधात्मकता (4) नारी के प्रति निम्न दृष्टिकोण
(5) भीड़ के बीच मनुष्य का एकाकी रूप में चित्रण (6) वक्तव्य की प्रधानता
(7) भौतिक उपयोगिता की प्रेरक (8) रिश्तों के फालतूपन की टीस
(9) सामाजिक मूल्यों और आदर्शों पर खीझती कविता
(10) महानगरीय जीवन के सन्त्रास का चित्रण
(11) नारी - स्वातन्त्र्य और नारी - सशक्तीकरण का स्वर
(12) नारी का नग्न चित्रण
(13) पर्यावरण - प्रदूषण की समस्या की चिन्ता -

Unit III विद्यापति (पदावली)

Ch. 9

'विद्यापति पदावली' की काव्यगत विशेषताएं :-
(1) वस्तु वर्णन की स्वाभाविकता (2) रस योजना - संयोग व वियोग वर्णन
(3) भाषा - शिल्प (4) गुण योजना (5) अन्योक्ति (6) छन्द योजना (7) अलंकार
(8) बिम्ब - विधान (9) प्रतीक विधान

Ch. 10 गोरखनाथ

गोरखनाथ के काव्य की विशेषताएं → (1) गुरु - महिमा (2) योगपरक साधना
(3) ब्रह्मानंद की स्थापना (4) नाड़ी साधना (5) शून्य की कल्पना
(6) नारी के प्रति दृष्टिकोण

गोरखनाथ का योग मार्ग — 'हठयोग' नामक योग मार्ग चलाया हठयोग में सांसरिक आकर्षणों के प्रति मन को हठपूर्वक रोका जाता है। इसके लिए शरीर में स्थित शक्ति रूपी कुण्डलिनी को जाग्रत करके शिव के निवास सहस्रार चक्र में ले जाया जाता है। इस प्रकार शक्ति से शिव का योग ही हठयोग है।

ह = सूर्य
ठ = चन्द्रमा
हठयोग = सूर्य और चन्द्रमा का संयोग - हठयोग की साधना शरीर पर आधारित है।

सिद्धों की संख्या ~~[illegible]~~ - 84
नाथों की संख्या व नाम - 9 - आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, चर्पटनाथ, चौरंगीनाथ, गाहिणीनाथ, जालन्धरनाथ, गोपीचन्द्रनाथ, भर्तनाथ

अमीर खुसरो की काव्यगत विशेषताएँ → भाव-पक्ष (1) स्वयं के भारतीय होने का गर्व

(2) हिन्दी से स्नेह (3) गुरु के प्रति सम्मान और श्रद्धा (4) अगाध देश-प्रेम

(5) आत्मविश्वास से परिपूर्ण (6) हिन्दु-मुस्लिम एकता की भावना का समावेश

(7) हिन्दुस्तानी संगीत के प्रशंसक (8) सरस काव्य (रसात्मकता)

(9) जनजीवन का चित्रण (10) विदेशी आक्रान्ताओं से घृणा

(11) मनोरंजकता

कला पक्ष — भाषा — खड़ीबोली, आम-बोलचाल की भाषा -

शैली — परम्परागत शैली; मुक्तक शैली

छन्द — गजल, गीत, लोकगीत, कव्वाली, दोहा, छन्दों का प्रयोग

अलंकार — उपमा, श्लेष, रूपक विरोधाभास, प्रश्नालंकार

MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

Unit-IV भक्तिकालीन निर्गुण कवि Ch. 12

कबीर की साखियों विषयवस्तु → (1) गुरु-महिमा (2) नाम की महत्ता

(3) विरह की महिमा (4) संसार की नश्वरता (5) माया पाप की जड़

(6) ब्रह्म-स्वरूप विचार (7) बाह्याचारों की निरर्थकता

(8) तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन (9) नीति एवं लोक-व्यवहार

कबीर की भक्ति भावना → (1) निराकार ब्रह्म की उपासना

(2) एक ही परमात्मा (3) कबीर-भक्ति में प्रेम का माधुर्य

(4) नाम-स्मरण का महत्व (5) गुरु की महत्ता (6) मध्यम मार्ग

(7) जीव की ब्रह्म की एकता (8) जीव का आत्म-समर्पण भाव

(9) निर्मल भाव (10) माया का प्रपंच (11) प्रणय-भाव

Ch. 13 मलिक मुहम्मद जायसी (मानसरोदक खण्ड)

जायसी की विरह-वर्णन की विशेषताएँ → (1) प्रेम की निरन्तरता

(2) प्रेम का सात्त्विक पक्ष (3) वेदना की भूमिका और मानवीय वेदना

(4) प्रेम की व्यापकता (5) प्रकृति और मानव का रागात्मक सम्बन्ध

(6) विरह की परम्परागत पद्धति का निरूपण

(7) विरह में मौलिकता और सजीवता

(8) भारतीय तथा विदेशी प्रकृति

Unit V भक्तिकालीन सगुण कवि

सूरदास

सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ → **भावपक्ष** → (1) श्रृंगार वर्णन (2) वात्सल्य वर्णन (3) भक्ति-भावना (4) दार्शनिकता (5) प्रकृति-चित्रण (6) भावुकता एवं वाग्वैदग्ध्यता (7) अलौकिकता एवं मौलिकता

कलापक्ष → **भाषा** – ब्रजभाषा **चित्रमयता** – रूप चित्र, भाव चित्र, स्वभाव चित्र, बाल-क्रीडा

अलंकार-योजना – विरोधाभास, विभावना, उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष, अनुप्रास, संदेह

छन्द – पद **शब्द-शक्तियाँ** = अभिधा, लक्षणा, व्यंजना

गुण = माधुर्य

सूरदास के भ्रमरगीत की विशेषताएँ

(1) वाग्विदग्धता और उक्ति-वैचित्र्य → (2) उपहास (3) उपालम्भ (4) वचनवक्रता अथवा व्यंग्योक्तियाँ (5) सहृदयता

गोस्वामी तुलसीदास (श्रीरामचरितमानस) Ch-15 (अयोध्याकाण्ड)

तुलसीदास की समन्वयात्मकता और लोकनायकत्व →

(1) धार्मिक समन्वय (2) निर्गुण-सगुण का समन्वय
(3) वैष्णव, शाक्त और शैव का समन्वय
(4) सर्वदेव समन्वय (5) कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय
(6) धर्म-युग समन्वय (7) सामाजिक समन्वय
(8) सन्त और असन्त का समन्वय (9) व्यक्ति और समाज का समन्वय
(10) व्यक्ति और परिवार का समन्वय (11) राजा-प्रजा का समन्वय
(12) साहित्यिक समन्वय (13) भाषागत समन्वय (13) शैलीगत समन्वय
(14) विविध रसों की योजना में समन्वय (हैं)

तुलसीदास की भक्ति भावना (1) भक्ति क्षेत्र में राम का स्वरूप (2) सेवक भाव भक्ति (3) प्रमुख देवी-देवताओं की भक्ति (4) भक्ति और कर्म का समन्वय (5) भक्ति का लोकपक्ष (6) राम की अनन्य भक्ति (7) निष्काम भक्ति

Unit VI रीतिकालीन कवि

केशवदास (कविप्रिया) Ch. 16

केशव :- कठिन काव्य के प्रेत → (1) कविता के लिए अलंकारों की अनिवार्यता
(2) अलंकारप्रियता (3) संस्कृतनिष्ठ भाषा (4) पाण्डित्य-प्रदर्शन की प्रवृत्ति
(5) भाव-गाम्भीर्य का अभाव (6) क्लिष्ट कल्पना (7) दरबारी कवि

केशव = एक सहृदय कवि :- (1) कोमल व सरस कल्पना
(2) भावुकता का परिचय (3) अलंकारप्रियता का त्याग
(4) प्रकृति-चित्रण में मार्मिकता

Ch. 17 बिहारीलाल (बिहारी रत्नाकर)

बिहारी की काव्यगत विशेषताएँ → भाव-पक्ष
(1) गागर में सागर (2) भक्ति एवं नीतिप्रधान रचनाएँ
(3) शृंगार वर्णन (4) प्रकृति-चित्रण (5) नायिकाभेद निरूपण
(6) कल्पना की समाहार शक्ति (7) उक्ति वैचित्र्य (8) बहुज्ञता
(9) सूक्ष्म पर्यवेक्षण-शक्ति (10) सूक्ति प्रयोग

कला पक्ष - भाषा - साहित्यिक ब्रजभाषा शैली = मुक्तक काव्य शैली
छन्द - दोहा अलंकार - श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

बिहारी की भक्ति भावना →
(1) किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध नहीं
(2) निर्गुण-सगुण में भेद नहीं
(3) राम कृष्ण में अन्तर नहीं (4) दैन्य भाव
(5) बिहारी में सखा-भाव की भक्ति
(6) निम्बार्क से प्रभावित मधुरा-भक्ति
(7) निष्काम भक्ति का समर्थन
(8) भक्ति में वक्रता और वाग्विदग्धता
(9) बाह्याडम्बरों का विरोध
10 भगवान के रूप

Ch. 18 घनानन्द (सुजानहित)

घनानन्द का प्रेमवर्णन → (1) भक्त अथवा प्रेमी कवि
(2) घनानन्द की प्रेमिका: सुजान (3) घनानंद में लौकिक प्रेम
(4) घनानंद और प्रेम-सम्बन्धी आदर्श

घनानन्द की प्रेम-सम्बन्धी विशेषताएँ →

(1) प्रेम पथ की श्रेष्ठता (2) प्रेम बुद्धिजन्य नहीं (3) आदर्शवादी प्रेम
(4) प्रेम की अनन्यता (5) प्रेम का सीधा मार्ग (6) स्वच्छन्द प्रेम
(7) भावात्मक प्रेम (8) विषम प्रेम (9) आन्तरिक प्रेम
(10) अवर्णनीय-वियोग दशा (11) अंग-प्रत्यंग की व्याकुलता
(12) सन्देश-प्रेषण

BULANDSHAHR

Unit VII भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Ch. 19

भारतेन्दु के काव्य की विशेषताएँ भावपक्ष

(1) भक्ति भावना (2) देशप्रेम की भावना (3) प्रकृति का सुरम्य चित्रण
(4) श्रृंगार रस का प्रभावपूर्ण परिपाक

कला पक्ष – (1) माधुर्यपूर्ण ब्रजभाषा (2) विविध छन्दों के प्रयोग
(2) शैली की विविधता (3) अलंकार योजना

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्य में राष्ट्रीय चेतना →

(1) → अंग्रेजी-शासन की नीयत की परख और उसका विरोध
(2) अतीत-गौरव का गान
(3) देशी राजाओं और सामन्तों के शोषण का विरोध
(4) सन 1857 ई० के विद्रोह का विश्लेषण
(5) ईश्वर से देशोत्थान की याचना
(6) जन समुदाय की जागृति की आवश्यकता पर बल
(7) स्वदेशी और राष्ट्रीय-चिन्तन की आवश्यकता पर बल
(8) भारतीय वीरों की प्रशंसा
(9) विदेशी दृष्टान्तों से प्रेरणा

Ch. 20 जयशंकर प्रसाद (छायावाद के जनक)

प्रसाद-काव्य में छायावादी विशेषताएँ →

छायावाद का अर्थ – द्विवेदी युग के बाद की कविता को छायावाद नाम दिया गया।

छायावाद का अर्थ – उस नवीन काव्यधारा से है जिसमें परम्परागत मान्यताओं की अपेक्षा करके प्रेम और सौन्दर्य के गीत नवीन शैली में लिखे गए, जिसमें कल्पना, भावुकता, लाक्षणिकता, चित्रात्मकता व ध्वन्यात्मकता आदि की प्रधानता थी।

डॉ० रामकुमार वर्मा – "परमात्मा की ~~आत्मा~~ छाया आत्मा में पड़ने लगती है आत्मा की परमात्मा में, यही छायावाद है"

विशेषताएँ – (1) सौन्दर्य भावना (2) श्रृंगारिकता (3) रहस्यात्मकता (4) स्वानुभूत सुख-दुख की विवृति (5) प्रकृति पर चेतना का आरोप (6) नारी की महत्ता (7) मानवता की अभिव्यक्ति (8) देश-प्रेम (9) बौद्धिकता (10) भाषा में प्रतीकात्मकता, लाक्षणिकता, ध्वन्यात्मकता (11) नूतन अलंकारों का प्रयोग (12) गीत एवं प्रगीत मुक्तक शैली (13) मूर्त के लिए अमूर्त एवं अमूर्त के लिए मूर्त का प्रयोग

Ch. 21 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

निराला की काव्यगत विशेषताएँ → भाव-पक्ष –

(1) छायावादी प्रवृत्ति (2) प्रगतिवादी प्रवृत्ति (3) रहस्यवादी प्रवृत्ति (4) सौन्दर्य एवं प्रेम का चित्रण (5) प्रकृति-चित्रण (6) राष्ट्र-प्रेम पर (7) निराशावाद की प्रचुरता (8) मानवतावादी दृष्टिकोण (9) रसनिरूपण (10) दार्शनिकता (11) भगवद्भक्ति (12) नारी-सम्बन्धी विचार (13) पौरुष और विद्रोह (14) नवीनता की स्थापना

कलापक्ष (1) भाषा – ~~सरल~~, व्यवहारिक, बोलचाल, व ~~प्रौढ़~~, सशक्त, ओजस्वी
(2) अलंकार = उपमा, रूपक, रूपकातिशयोक्ति, मानवीकरण
(3) प्रतीक योजना – (4) बिम्ब-विधान एवं ध्वन्यात्मकता (5) छन्द योजना

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

Ch.22 सुमित्रानन्दन पन्त

पन्त के काव्य की विशेषताएँ :- भावपक्ष

(1) सौन्दर्यानुभूति एवं प्रेम-चित्रण (2) कल्पना के विविध रूप
(3) रस-निरूपण (4) ग्राम्य संस्कृति का चित्रण (5) दार्शनिकता
(1) भाषा - चित्रभाषा और चित्रराग अर्थात संगीतात्मकता
(2) प्रतीकात्मकता (3) लाक्षणिकता (4) ध्वन्यात्मकता व नाद-सौन्दर्य
(5) नूतन शैली (6) अलंकार योजना - रूपक, अन्योक्ति, अतिशयोक्ति

पन्त का प्रकृति चित्रण (1) संश्लिष्ट-चित्रण (2) इन्द्रिय संस्पर्शात्मक चित्रण
(3) उद्दीपन रूप (4) उपदेशदात्री रूप में (5) मानवीकरण (6) परिगणन शैली
(7) उपमान रूप में (8) आलंकारिक रूप में (9) रहस्यात्मक रूप में (10) दूती रूप

ch.23 महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताएँ :- भावपक्ष

(1) अलौकिक प्रेम का चित्रण (2) प्रकृति-चित्रण
(3) रहस्यात्मकता (4) वेदना-भाव

कलापक्ष (1) सूक्ष्म अप्रस्तुत-विधान (2) लाक्षणिकता (5) लोकगीत के तत्व
(3) प्रतीक-योजना (4) कोमलकान्त पदावली
(6) महादेवी वर्मा की विरहानुभूति की विशेषताएँ →

(1) करुणा की प्रधानता (2) नारी-सुलभ सात्विकता
(3) आध्यात्मिकता (4) स्वाभाविकता एवं सजीवता
(5) व्यापकता (6) विरह की अजस्रता (7) अन्तर्दशाओं की विविधता

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति-चित्रण की विशेषताएँ -

(1) आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण (7) प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति चित्रण
(2) उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण (8) अपनी छाया.
(3) प्रकृति का मानवीकरण
(4) अलंकरण रूप में प्रकृति चित्रण
(5) प्रकृति पर नारी भावना का आरोप
(6) रहस्यवादी भावना की अभिव्यक्ति

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

Unit VIII छायावादोत्तर कवि और हिन्दी साहित्य में शोध

Ch-24
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' (प्रयोगवाद के प्रवेशक)

अज्ञेय के भाव-पक्ष की विशेषताएँ → भाव-पक्ष
(1) प्रणयानुभूति (2) व्यक्तिनिष्ठ (3) क्षणानुभूति (4) जिजीविषा
(5) आर्थिक असमानता (6) क्रान्ति की भावना (7) आध्यात्मिकता
(8) नूतन सौन्दर्य-बोध (9) प्रकृति प्रेम (10) देश-प्रेम

कलापक्ष — भाषा एवं शब्द योजना (2) लाक्षणिकता (3) प्रतीकात्मकता
(4) बिम्ब-विधान (5) अलंकार विधान (6) छन्द-विधान —
(क) लय एवं तुकयुक्त मुक्त छन्द (ख) लय तुकविहीन मुक्तक छन्द
(ग) गद्यात्मक मुक्त छन्द

अज्ञेय के काव्य में प्रयोगवादी प्रवृत्तियाँ →
(1) घोर वैयक्तिकता (2) नग्न श्रृंगारिकता (3) अतियथार्थता
(4) निराशावादिता (5) बौद्धिकता (6) शिल्पगत नवीनता

Ch-25 नागार्जुन

INSTITUTE OF MANAGEMENT BULANDSHAHR

नागार्जुन की काव्यगत विशेषताएँ →
(1) प्रणय-भावना (2) वैयक्तिकता (3) सामाजिक यथार्थ (4) स्वदेशानुराग
(5) प्रकृति प्रेम (6) विद्रोही मनोवृत्ति (7) समसामयिकता (8) बहुभाषाज्ञ
(9) प्रतीकात्मकता (10) बिम्ब-विधान (11) अलंकार विधान - उपमा, मानवीकरण
(12) छन्दबद्ध तुकान्त कविता (13) छन्दबद्ध अतुकान्त कविता

नागार्जुन की कविता में प्रगतिवादी प्रवृत्तियाँ →
(1) ऐतिहासिक चेतना (2) सामाजिक यथार्थदृष्टि (3) भविष्योन्मुखीदृष्टि
(4) जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण (5) मानवीय सम्बन्धों में समानता
(6) ऐतिहासिक मूर्तता (7) छन्द एवं लय विधान

नागार्जुन का वास्तविक नाम → नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था वे अपने पिता के साथ पुरोहिती के साथ जाते थे इसी कारण इन्होंने अपना नाम 'यात्री' रखा। बाद में इन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार किया और महात्मा बुद्ध के शिष्य के नाम पर इन्होंने अपना नाम नागार्जुन रख लिया।

Ch·26 धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती की काव्यगत विशेषताएँ →

① विराट सत्य की खोज ② प्रेम की निराशा और अकुलाहट
③ नया सामाजिक स्वर ④ सरल भाषा और नया प्रतीक विधान
⑤ मुक्त छन्द में लय का प्रयोग ⑤ बिम्ब विधान

आधुनिक चेतना की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कवि →

① युवावस्था के प्रेम की भावुकता ② थके हुए कलाकार को दिलासा
③ विराट सत्य की खोज ④ प्रेम में निराशा और अकुलाहट
⑤ नया सामाजिक स्वर

Ch·27 शमशेर बहादुर सिंह

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य की विशेषताएँ →

① स्वस्थ सामाजिक चेतना ② सामाजिक यथार्थ-ग्रहण की प्रवृत्ति
③ शुद्ध प्रेम एवं मानवतावाद ④ कुण्ठित प्रेम ⑤ प्रकृति-चित्रण
⑥ सौन्दर्य-बोध ⑦ निराशावाद

काव्य में प्रगतिवादी विशेषताएँ →

① ऐतिहासिक चेतना ② सामाजिक यथार्थ दृष्टि
③ परिवेश और प्रकृति के प्रति लगाव
④ जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण
⑤ मानवीय सम्बन्धों में समानता
⑥ भविष्योन्मुखी दृष्टि ⑦ रूप अथवा शिल्प को महत्व
⑧ भाषा की सम्प्रेषणीयता ⑨ छन्द व लय का मुक्त बन्ध

शमशेर के काव्य की प्रयोगवादी विशेषताएँ →

① विचारधारा से मुक्ति ② सत्य के लिए निरन्तर अन्वेषण
③ व्यक्तिवाद ④ यथार्थ दृष्टि ⑤ काव्य भाषा
⑥ प्रतीक और बिम्ब

BULANDSHAHR

Ch-28 दुष्यन्त कुमार

काव्य की विशेषताएँ :- दुष्यन्त के भावपक्ष की विशेषताएँ-

① रुढ़ियों से उपजा युग-बोध ② दर्द की अभिव्यक्ति
③ जीवन की व्याख्या. ④ खण्डित जीवन-मूल्यों के प्रति चिन्ता
⑤ जर्जरित परम्पराओं का विरोध ⑥ भावनाओं का संस्पर्श
⑦ दुःख की महत्ता का प्रतिपादन (8) निराशा और आशा का बदलता रूप
⑨ समाज में व्याप्त घृणा के प्रति चिन्ता ⑩ युद्ध-अशांति और हथियारों की होड़
⑪ स्वातन्त्र्योत्तर अव्यवस्था पर क्षोभ.

दुष्यन्त की गजलों के विषय और क्षेत्र :-

① देश के नेतृत्व के प्रति आक्रोश ② देश-भक्ति की प्रेरणा
③ आम आदमी की पीड़ा की अभिव्यक्ति के लिए गजल
④ संवैधानिक की आड़ में देश को फटेहाल बनाए रखने के प्रति चिन्ता
⑤ भ्रष्टाचार से क्षुब्ध (6) उम्मीद की गजल
⑦ असफलताओं के बीच आस्था ~~का~~ सम्बल
(8) व्यवस्था-परिवर्तन के लिए व्याकुल
(9) व्यवस्था-परिवर्तन के लिए मुखरता आवश्यक
(10) सन्तोष की सीख
(11) भटके हुओं को राह दिखाने की गजल
(12) घोर निराशा और अवसाद की गजल

हिन्दी के आरम्भिक गजलकारों के नाम — ① भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
② जयशंकर प्रसाद (3) हरिवंशराय बच्चन (4) शमशेर बहादुर सिंह

MANAGEMENT
BULANDSHAHR